International Journal of History 2020; 2(2): 128-129

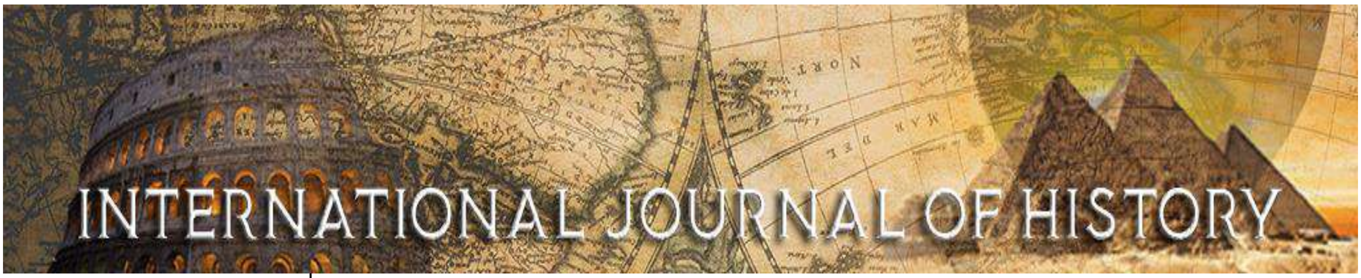

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
IJH 2020; 2(2): 128-129
Received: 29-05-2020
Accepted: 30-06-2020

डॉ0 सृष्टि गर्ग
एम. ए., पीएचडी (इतिहास),
एल. एन. मिथिला यूनिवर्सिटी,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 सृष्टि गर्ग
एम. ए., पीएचडी (इतिहास),
एल. एन. मिथिला यूनिवर्सिटी,
दरभंगा, बिहार, भारत

महात्मा बुद्ध जन्म एवं निर्वाण एक झलक

डॉ0 सृष्टि गर्ग

प्रस्तावना

अति प्राचीन काल से ही सम्पूर्ण समाज धर्म की शीतल छाँव में क्रियाशील रहा है। मानव मात्र का यह स्वभाव है कि वह निराकार कल्पना को साकार स्वरुप प्रदान कर देता है। वैदिक काल से ही धर्म का जीवन में एक विशेष स्थान रहा है। छठी शताब्दी ई0 पू0 आते–आते समाजं वैदिक और धार्मिक क्रांति का रुप ले लिया। इस समय धार्मिक आंदोलन का केन्द्र मगध था। उपनिष्दों ने इस काल के पूर्व ही पेचीदे कर्मकाण्ड और रक्तिम यज्ञों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। आत्मा और परमात्मा का रहस्योद्रधाटन और जन्म मरण की श्रृंखला से मोक्ष की साधन ज्ञान तथा कठोर तप की व्यवस्था दी जा रही थी। अनेक सुधारवादी संप्रदाय उठ खड़े हुए थे ऐसी विषम परिस्थितियों में महात्मा बुद्ध एक ऐसे महामानव के रुप में अवतरित हुए जिनके विचारों और उनकी वाणी युग–युग तक लोगों को करुणा का पवित्र संदेश देती रहेगी।

कौशल राज्य के पूर्व की ओर रोहणी नदी के दोनों किनारे पर आमने–सामने दो स्वतंत्र जाति रहती थी उनमें एक शाक्य और दूसरी कोली जाती थी। कहा जाता है कि शाक्य सौगन के वृक्ष के आधिक्य के कारण इस प्रदेश का नामकरण शाक्य हुआ। शाक्यों [1] के संबंध में कहा जाता है कि वे शुद्ध क्षत्रिय के संतान थे। [2] इनका गोत्र गौतम था। [3]

शाक्यों की गद्दी पर शुद्धोधन थे। महाराजा शुद्धोधन ने कोली महाराज की दो कन्याओं से विवाह किया था। विवाह के बहुत बाद इन दोनों में से बड़ी बहन गर्भवती हुई। गर्भवती होने के पूर्व इनकी माता महामाया ने रात में स्वप्न देखा कि हिमालय मे स्थित अनुवतुप्त नामक देवी झील की ओर ले जायी गयी हैं जहाँ वे जगत के चातुर्दिक कोणों की देवी रक्षकों द्वारा नहलायी जाती हैं। वहाँ एक श्वेत हाथी अपनी सूँढ़ में कमल का फूल लिए उनकी ओर आता है। दूसरे दिन उनके इस स्वप्न पर भविष्यवाणी की गयी कि उन्हें अद्रभूत पुत्र उत्पन्न होगा जो या तो चकवर्ती सम्राट होगा अथवा चकवर्ती उपदेशक। [4]

दस मास तक बोधिसत्व को गर्भ में रखने के बाद जब प्रसव का समय आया तब रानी महामाया की इच्छा अपने मातृकुल के नगर देवदह में जाने की हुई। [5] राजा ने अनुमति दे दी और कपिलवस्तु से देवदह का मार्ग साफ करके कदली से सुशोभित मंगल कलश ध्वज–पताकाओं से अलंकृत करके रानी को पालकी से भेजा गया। मार्ग में लुम्बिनी ग्राम [6] में महारानी रुकी और शालवृक्ष के नीचे उसकी शाखा पकड़कर खड़ी थी कि इस बीच उसे प्रसव वेदना हुई और व्याकुल हो उठी तत्काल बालक के रुप में सिद्धार्थ का जन्म उस ग्राम के शाल वृक्षों के बगीचे में हुआ। जन्म होने पर वे खड़े हो गए और सात डग भरे और कहा कि "यह मेरा अंतिम जन्म है इसके बाद मेरा कोई जन्म नही होगा"। कालान्तर में बुद्ध के जन्म स्थान पर सम्राट अशोक ने उनके जन्म की स्मृति में एक प्रस्तर स्तंभ स्थापित कराया था तथा उस पर उत्कीर्ण करवाया कि यहीं भगवान "शाक्य मुनि" बुद्ध उत्पन्न हुए थे। [7]

बालक के जन्म के उपरांत तुरंत उनका सात डग चलना एवं अपनी माता को उपयुक्त वचन कहना अपने–आप में ही एक अदभूत घटना है जो इतिहास में इसके बाद कभी भी नहीं घटित हुई।

जन्म के पाँचवें दिन एक बड़े समारोह में उनका नामकरण सिद्धार्थ किया गया। उनका

गोत्र गौतम था अतः उन्हें गौतम भी कहा गया। उनके जन्म के सातवें दिन ही उनकी माता महामाया का देहावसान हो गया। [8] उनका लालन पालन उसकी मौसी गौतमी ने किया।

लगभग 560 से 480 ई0 पू0 तक बुद्ध एक मानव के रुप में रहे। कालदेव और कोण्डिनय का मत था कि वे संसार का त्याग करेंगे। राजा शुद्धोधन यह नहीं चाहते थे अतः उन्हें अत्यंत भोग विलास में रखा गया। परंतु देवदूतों द्वारा प्रदर्शित जन्म–जरा रोग मृत्यु दुःख और अपवित्रता में उन्हें संसार त्याग और निवृति की ओर उत्प्रेरित किया। [9] वह पत्नी और पुत्र को सोते हुए छोड़कर 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया। [10] इस घटना को बौद्ध साहित्य में महाभिनिष्क्रमण कहते हैं। अपने माता–पिता की अनिच्छा और अश्रुपुरित नेत्रों से रुदन करने के बाद भी वे काषाय वस्त्र पहन कर गृह त्याग कर अनिकेत जीवन अपना लिया। [11] सत्य और ज्ञान की प्राप्ति की चाह में भ्रमण करते रहे एवं मानव के दुःख नाश तथा उनके जीवन को संयमित करने के अष्टांगिक मार्ग को प्रदर्शित किया।

अंत में विख्यात निरंजना नदी [12] (बौद्ध साहित्य की प्रसिद्ध नदी) के तट पर बोधी वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई थी। [13] यह वैशाख पुर्णिमा का दिन था। 528 ई0 पू0 35 वर्ष की अवस्था में उन्हें ज्ञान प्राप्ति के बाद लगातार घूम–घूमकर ज्ञान का प्रचार किया और लगातार 20 वर्षावास किए। एवं मानव के दुःख नाश एवं उनके जीवन को संयमित करने के अष्टांगिक मार्ग को प्रदर्शित किया।

79 वर्ष की आयु में महात्मा बुद्ध अपनी अंतिम यात्रा राजगृह से प्रारंभ की तथा वैशाली के मार्ग से आगे बढ़ते हुए भण्डग्राम, हरिथग्राम, आम्रग्राम, जम्बूग्राम होते हुए भोगग्राम पहुँचे। [14] भोगग्राम से चलकर महात्मा बुद्ध मल्लों की नगरी पावा पहुँचे। [15] यहाँ चुंद कर्माकर द्वारा दिया हुआ सुकरमद्दव का भोजन किया इसी सयम महात्मा बुद्ध को पेट की कड़ी बिमारी ;रक्त पेचिश) उत्पन्न हुई। महात्मा बुद्ध ने मन में यह विचार किया कि उनकी यह आवस्था के कारण लोग चुंद को न दोष देने लगे अतः उन्होंने उस स्थान को शीघ्र ही छोड़ देना चाहा और पावा से कुशीनगर की ओर प्रस्थान किया।

अब महात्मा बुद्ध अपने झुण्ड के साथ हिरण्यवती नदी के किनारे बढ़े। कुशीनगर की ओर जहॉ उपवत्तन शाल वृक्ष कुंजो का स्थान था, वहाँ पहुँचकर आनंद को संबोधित करते हुए कहा–आनंद अब तुम मेरे लिए इतना करो कि एक चटाई (चारपाई) पर मुझे लिटा दो और मेरे सिर को यमक जुड़वां शालवृक्षों के बीच में उत्तर की तरफ रख दो। मैं बिल्कुल थक गया हूँ आनंद और मैं, यहाँ विश्राम करना चाहता हूँ। आनंद ने सहमति प्रकट करते हुए कहा – "हाँ भगवन" और खाट को उत्तर की तरफ कर सिर रख कर दो शालवुक्षों के बीच में लिटा दिया। महात्मा बुद्ध दाहिने सिंह शैय्या पर लेट गए। दोनों शाल वृक्ष फूलों से लद गये यधपि यह फूल खिलने की ऋतु नहीं थी। फूल वृक्षों से गिरकर उनके शरीर पर विखर गए। महात्मा बुद्ध ध्यान में लीन हो गए। आसमान से आकाश कुसुम एवं चंदन लकड़ी के चूर्ण भी महात्मा बुद्ध के शरीर पर विखर गए। मानो वह महात्मा बुद्ध के पूजा में लीन हो।

इसके बाद महात्मा बुद्ध ने सभी भिक्षुओं को तीन बार कहा कि उन्हें कुछ संशय हो तो पूछ लें। पर सभी मौन रहे–अब उन्होंने अंतिम वचन कहा–"अब मैं आप सवों से विदा लेता हूँ।" 'हे भिक्षु' इस समय मैं यह कह रहा हूँ कि ये सभी धर्म वस्तुऍं नाशधर्मी है अतः अप्रमाद युक्त होकर ;जीवन लक्ष्य का) संपादन करो। [16]

इसके बाद महात्मा बुद्ध प्रथम तन्द्रा से निकलने के बाद द्वितीय फिर तृतीय फिर चतुर्थ और अंत में आकाश के साम्रज्य में प्रवेश कर गए। वे चेतना के अनंत साम्राज्य में पहुँच गए, जहॉ शुन्य है, जहॉ ज्ञान और अज्ञान का कोई भेद नहीं है। इस तरह वे शुन्य में विलीन हो गए और फिर चौथी तन्द्रा से वापस आए और फिर इसी तरह तृतीय, द्वितीय और प्रथम में आए। इसी तरह चलते–चलते उन्होंने निर्वाण को प्राप्त कर लिया। सभी भिक्षु हाथों को फैलाकर विक्षिप्त की भॉंति क्रंदन करने लगे पर अपने दुःख पर सान्त्वना प्राप्त कर वे जगत की क्षण भंगुरता के कारण आस्वस्थ हो गए।

संदर्भ सूचीः

1. स्टडीज इन ऑरिजीन्स ऑफ बुद्विज्म पाण्डय; पृ0; 371
2. अम्बद्वसुत्त जातक। दृ 88 डी0 आई0
3. लाईव ऑफ बुद्धाय; थॉमस पृ0–22–23
4. मज्झिम निकायय सौन्दरानंद 1/24
5. वही; 3.118
6. वही; 3.118
7. रुम्मिनदेई अभिलेखय हिदेबुधे जाते शाक्य मुनीत; उद्धत पंक्ति;
8. मज्झिम निकाय; 311
9. मज्झिम निकाय; 1.163, ललितविस्तर;14
10. "एकून तिसो वयसा सुभद्ध यं पव्वणि कि कुशलानुएसि" महापरिनिब्बान सुत्त; 22;
11. मज्झिम निकाय; 1.163-171
12. अश्वधोष की कृतियों मे चित्रित भारतीय संस्कृतिय नसरीन जबी, किश्वरय हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद पृ0–100
13. "अध नैरंजनातीरे शुचौ शुचिपराक्रय, चकार वासमेकांत बिहारमिव्रती मुनी"य, बुद्ध चरित्र; 12/88
14. बुद्ध चर्य्याय हवलदार त्रिपाठी; पृ0–132
15. पूर्वोद्धृत पुस्तकय सांकृत्यायन राहुल; पृ0–498
16. "हदं दानी भिक्खवे आमन्तयामि वो। वय ध्म्मा संखारा अधमोदन सम्पोदयति।" पूर्वोद्धृत पुस्तक सहृदय य हवलदार त्रिपाठी; पृ0–132